NGOs and make every office a corrupt institution.

Today, as the practice is, if Members of the Board go and inspect and report and if they do a wrong thing, naturally, it can be easily found out because the Board will change, Members will change. They are not a permanent entity. I do not know who took the decision. What is the basis for it? It was not accepted , not decided by the Chairpersons of different State Boards. So, there was no discussion at all. So, perpetuating corruption in the State Social Welfare Boards through officers and corrupting the NGOs by this new direction are most dangerous. So, I request the Government, through you, to reconsider this direction and restore the powers of the State Social Welfare Boards, and the rights of the Members of the Board should also be restored. Thank you.

Need to Protect Pushkar Lake

श्री ओंकर सिंह लखावत (राजस्थान): उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं इस विशेष उल्लेख के द्वारा एक लोक महत्व के विषय की ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। हमारे यहां देश में जब भी कोई आदमी अपने आपको संकटमय महसूस करता है तो वह तीर्थराज पुष्कर में जाता है और वहां जाकर कुछ न कुछ मांगता है। आदमी को कुछ न मिले तो भी वहां जाकर वह स्नान करके कुछ न कुछ प्रार्थना करके आता है और जब मरता है तो उसके बाद उसकी अस्थियों को मोक्ष प्राप्त हो जाए इस दृष्टि से भी तीर्थराज पुष्कर में जाकर के अस्थियों को प्रवाहित करके मोक्ष की प्राप्ति की बात होती है। आज ऐसे तीर्थराज की हालत बहुत ही खराब हो रही है। इसलिए उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आज सदन का ध्यान उस तीर्थराज की ओर आकर्षित करना चाहता हूं, जिसे तीर्थराज पुष्कर कहते है।

महोदय, तीर्थराज पुष्कर में एक ज्येष्ठ पुष्कर है, एक बूढ़ा पुष्कर है और एक मध्यम पुष्कर है। स्थिति यह बन गई है कि यह जो तीनों पुष्कर हैं, वहां बढ़ते हुए रेगिस्तान ने उनके अस्तित्व को समाप्त करने की स्थिति में लाकर के खड़ा कर दिया है। हमारी जो अरावली पर्वत श्रृंखला है, इस अरावली पर्वत श्रृंखला के जितने गेप्स हैं और जो गोविंदगढ़ से सुमेल का 18 किलोमीटर का गेप है, इन गेपों से पश्चिमी रेगिस्तान से बहुत तेजी से वहां पर रेगिस्तान आ रहा है। रेगिस्तान आने के बाद स्थिति यह बनी है कि जो हमारा बूढ़ा पुष्कर है, उसके दो दिन पहले के फोटोग्राफ मैं यहां सदन के सामने लेकर आया हूं, जिसमें पूरे का पूरा रेगिस्तान ने इसको फुटबाल का मैदान, एक खेत बनाकर के ला खड़ा किया है। इसके चारों तरफ पानी की आवक समाप्त हो गई है और चारों तरफ स्थिति यह हो गई है कि वहां पानी का ठहराव नहीं है। पूरे के पूरे बूढ़े पुष्कर का अस्तित्व समाप्त हो गया है।

महोदय, मैं उस ज्येष्ठ पुष्कर की बात करता हूं जहां करोड़ों लोग जाकर डुबकी लगाकर स्नान करते हैं। उसकी ओर भी मिट्टी ने तेजी से प्रवाह शुरू किया है और लगभग 50 फुट से लेकर 75 फुट तक बालू मिट्टी उस सरोवर में आकर जमा हो गई है। पिछले कुछ वर्षों से राजस्थान सरकार ने लगभग 4 करोड़ 62 लाख का एक प्रोजेक्ट बनाया, उसको दो-तीन बार डीसिल्ट भी किया, उसके पास के एरिए में भी कुछ काम किया, परन्तु वर्षा की ऋतु में उतनी की उतनी मिट्टी आकर के वापस उसमें जमा हो जाती है। अब दिसंबर महीना ज्यों ज्यों समाप्त होगा, वहां पानी समाप्त होकर केवल एक कुण्ड मात्र रह जाएगा और करोड़ों उन आस्थावान लोगों को, श्रृदालुओं को बहुत कष्ट और पीड़ा होगी। यह एक बहुत बड़ा संकट आकर वहां खड़ा हुआ है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं सदन का ध्यान इसलिए आकर्षित करना चाहता हूं कि जब पहले बारह से एक बजे तक स्पेशल मेंशन का समय था, उस समय यह बात कही गई थी आस्था की। मैं निवेदन करना चाहता हूं, पर्यटन केन्द्र के नाते विकसित करने की बात हो, कोई आपत्ति की बात नहीं है, पर पर्यटक पर्यटन स्थल घूमने के बाद संस्कार लेकर नहीं आ सकता, मगर यह तीर्थस्थल ऐसा है, जहां व्यक्ति जाकर कुछ संस्कार लेकर आता है, जहां से कुछ न कुछ अपने मन में श्रेष्ठ भाव लेकर आता है। इस तीर्थराज में करोड़ों लोगों की आस्था है। मुझे यह कहते हुए कोई दिक्कत नहीं है कि केन्द्र के द्वारा पचास सालों में इन तीर्थ-स्थलों के बारे में कोई स्थाई रूप से नीति नहीं बनाई गई। कौन चिंता करेगा इन तीर्थ-स्थलों की?

उपसभाध्यक्ष महोदय, पुष्कर में जो 52 घाट हैं, उन घाटों की स्थिति यह बन गई है कि उसमें बहुत से घाटों के ऊपर होटल बन गए हैं और उन होटलों का प्रदूषित पानी पुष्कर सरोवर के अंदर जाने लग गया है। उसकी कौन रक्षा करेगा, क्योंकि तीर्थराज पुष्कर का धनी-धोरी कोई नहीं। ऐसे अनेकों स्थल देश में हो सकते हैं। क्या

सरकार का यह दायित्व नहीं बनता कि इन तीर्थ-स्थलों की वह सुरक्षा करे, वहां का धार्मिक महत्व और धार्मिक वातावरण बनाए रखने के लिए सरकार प्रयास करे? मैं इसके नाते, उपसभाध्यक्ष महोदय, आपसे कुछ निवेदन करना चाहता हूं कि एक तो पुष्कर में आते हुए रेगिस्तान को रोकने के लिए कोई विशेष योजना बननी चाहिए और पुष्कर में जहां मिट्टी जमा है वहां डीसिल्ट किया जाना चाहिए। इस तरीके से काम हो, उसमें चाहे डीपीएपी के प्रोग्राम हैं या दूसरे प्रोग्राम, परन्तु केवल यह पुष्कर से काम नहीं चलेगा, जहां से पश्चिमी राजस्थान का रेगिस्तान एण्टर हो रहा है उसको वहां पर रोकने के कोई न कोई प्रयास हमको स्थाई रूप से करना पड़ेंगे। इसलिए तीर्थराज पुष्कर की ओर से मैं आज सदन से यह प्रार्थना करता हूं कुछ हमारे बारे में भी सोचो। तीर्थराज पुष्कर के बारे में भी सदन और सरकार सोचे, एक निवेदन यह। उपसभाध्यक्ष महोदय, संक्षिप्त में मैं दूसरा यह निवेदन करूंगा कि हिप्पी कल्चर वहां तेजी से डवलप हो रहा है। आज कोई ऐसा देश नहीं है जहां पर व्यक्ति वहां नशीले पदार्थ लेकर न आता हो। केवल मैं बात भाषण के रूप में नहीं कहता बल्कि पुलिस ने एन०डी०पी०एस० एक्ट के तहत पकड़े, विदेशी लोग गिरफ्तार हुए। अफगानिस्तान के कुछ शरणार्थी लोग वहां तस्करी करते हुए पकड़े गए। इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हमारा पुष्कर का जो धार्मिक स्वरुप है, धीरे-धीरे उस पर हमला प्रारम्भ हुआ। इसलिए इस तीर्थराज की अस्मिता को बचाए रखने के लिए - वहां पर पर्यटक खूब आएं तीर्थयात्री खूब आएं, वर्षों रहें हम उनका हार्दिक स्वागत करेंगे परन्तु हमारी संस्कृति पर हमला करने वालों पर, मादक द्रव्य व नशीले पदार्थों का ट्रेफिक करने के नाते वहां आने वाले लोगों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई करने की व्यवस्था हो जाए। भारत सरकार से भी मैं एक निवेदन करुंगा कि इसके संबंध में तीर्थ-स्थलों के लिए एक स्थाई नीति बनादें और इसके विकास के लिए एक स्थाई कोष की स्थापना हो जाए। सब के लिए पैसा दे रहे हैं, हम टूरिज्म के लिए पैसा दे रहे हैं, हम घोड़ावन पक्षी के लिए दे रहे हैं, हम पेड़ों के लिए पैसा दे रहे हैं, हम नाली के लिए पैसा दे रहे हैं और तीर्थ-स्थलों के लिए हमारे पास पैसा नहीं है। क्यों नहीं है पैसा? इसलिए मैं सरकार से निवेदन करुंगा कि विशेषज्ञों का एक दल बन जाए, तीर्थराज पुष्कर को जो खतरा है उसका जाकर अध्ययन करे। डा० हनुमन्ताराव कमेटी आई थी। मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं और मैं एक निवेदन करके अपनी बात को समाप्त कर रहा हूं। अब यह बूढ़ा पुष्कर इसके अस्तित्व के नाते भारत सरकार इसका परिसंज्ञान ले और एक विशेषज्ञ दल को भेजकर उसके अनुरूप उनकी अस्मिता को और उसको बचाने की दृष्टि से प्रयास करे। इसके आसपास के जुड़े हुए पंचकुंड है, गोमुख हैं, नन्दा, सरस्वती, सावित्री, गायत्री, अगस्तय मुनि, अजयपाल, बैजनाथ मृकुंड आश्रम, पापमोचनी और यह नया कुंड कपिल मुनि और लक्ष्मी पोल, यह कुछ तीर्थस्थल इसके चारों तरफ हैं। लोग कहते हैं कि वहां 33 करोड़ देवी-देवता कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की पंच तिथियों - ग्यारस से लेकर पूर्णिमा तक आते है। वहां लाखों लोग आते हैं। इस सदन और सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि इस तीर्थराज पुष्कर को समाप्त होने से तथा उसकी अस्मिता को समाप्त होने से रोके। आपने मुझे समय दिया इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री बी०पी० सिंहल (उत्तर प्रदेश): माननीय चेयरमैन सर, मैं अपने को इस विषय से सम्बद्ध करते हुए न सिर्फ पुष्कर की बल्कि और तीर्थ हैं उनके बारे में भी एक योजना बननी आवश्यक हैं, इस पर बल्स देना चाहता हूं। अभी कल ही दूरदर्शन से मैं देख रहा था कि बनारस में 108 घाट हैं और वहां पर भी घाटों पर स्नान करने की स्थिति नहीं है। लोग वहां पर पार जा करके स्नान कर रहे हैं। एक के बाद दूसरे का इंटरव्यू दिखाया गया। उन्होंने कहा कि यहां घाट पर स्नान नहीं कर सकते कि कहीं कुत्ता मरा पड़ा हैं, कहीं लाश पानी में फूल रही है। ऐसी स्थितियां जगह-जगह तीर्थों में हैं। हमारे तीर्थों की अभी तक कोई भी योजना किसी भी शासन में नहीं बन पाई। मैं चाहता हूं कि इसमें पूरा सोच समझकर एक कार्यक्रम बनाया जाए और तीर्थों की जो जरूरियातें हैं उनको पूरा करके उन्हें इस काबिल बनाया जाए कि वहां जाने वाले श्रद्धालु लो अपने तीर्थ का फल भोग सकें। धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANATAN BISI): Shri Brahmakumar Bhatt.

Devastation caused by Cyclone in Kandla and Need for Assistance under N.F.C.R.

SHRI BRAHMAKUMAR BHATT (Gujarat): Mr. Vice-Chairman, Sir, I want to raise a very important issue related to the devastating cyclone that struck Kandla. It is very well known that because of this cyclone, 3000 persons, as per the State Government, died. Unofficial reports say that the figure was